संपादकीय

हिलती-डुलती सियासत

चुनाव आयोग ने पांच राज्यों में विधानसभा चुनावों की तारीखें घोषित कर दीं, लेकिन एक हद तक मिजोरम और राजस्थान को छोड़ दें तो कहीं भी यह साफ नहीं है कि लड़ाई का स्वरूप क्या होगा। मिजोरम में मुख्य लड़ाई कांग्रेस और मिजो नैशनल फ्रंट की अगुआई वाले मिजोरम डेमोक्रैटिक अलायंस के बीच है जबकि राजस्थान में भी सीधी लड़ाई बीजेपी और कांग्रेस के बीच होनी है। बाकी राज्यों के बारे में इतने निश्चय के साथ कुछ नहीं कहा जा सकता। तेलंगाना को अपने मुख्यमंत्री की सियासी चाल के तहत इन चारों राज्यों के साथ चुनावी लड़ाई में शामिल होना पड़ा, लेकिन हालात वहां भी रोज बदल रहे हैं। मुख्य लड़ाई भले टीआरएस और कांग्रेस में हो, पर तेलुगूदेशम का भी कुछ क्षेत्रों और जातियों में अच्छा प्रभाव है।

इस चुनाव में अगर कांग्रेस और तेलुगूदेशम के बीच गठबंधन बनता है तो न केवल चुनाव नतीजों पर इसका महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ेगा, बल्कि यह पहला मौका होगा जब एक-दूसरे की प्रबल विरोधी मानी जाने वाली ये पार्टियां साथ मिलकर चुनाव लड़ेंगी। छत्तीसगढ़ और मध्यप्रदेश में बीजेपी पिछले 15 वर्षों से सरकार में है और इन राज्यों के चुनावों को सबसे ज्यादा दिलचस्पी से देखा जाएगा। छत्तीसगढ़ में यह पहला मौका है जब बीजेपी और कांग्रेस के अलावा कोई तीसरा पक्ष भी मैदान में है। अजित जोगी की पार्टी जनता कांग्रेस ने बीएसपी से गठबंधन किया है। यह पार्टी पहली बार ही विधानसभा चुनाव का सामना कर रही है, इसलिए इसके वास्तविक प्रभाव के बारे में अभी से कुछ कहना मुश्किल है। बीएसपी की ताकत यहां सीमित ही है, लेकिन उसकी बातचीत पहले कांग्रेस से चल रही थी। इन दोनों पार्टियों का साथ आना कांग्रेस के लिए झटका तो है, पर यह गठबंधन चुनाव नतीजों को किस हद तक प्रभावित करेगा, इस बारे में फिलहाल अटकलें ही लगाई जा सकती हैं। जहां तक मध्य प्रदेश की बात है तो वहां कई तरह के कारक अनिश्चितता को बढ़ा रहे हैं।

पिछले कुछ समय से प्रदेश में सवर्ण असंतोष फूट पड़ा है, जिसका शिकार कांग्रेस और बीजेपी, दोनों पार्टियां हुई हैं। प्रदेश बीजेपी में पिछड़ा नेतृत्व ऊपर से नीचे तक दिखता है, जबकि कांग्रेस के सभी प्रभावशाली नेता सवर्ण हैं। इस असंतोष को अगर कोई चुनावी शक्ल मिलती है तो कांग्रेस के लिए यह ज्यादा बड़ी चिंता का विषय होगा। बीएसपी ने मध्य प्रदेश में अकेले लड़ने की बात कही है, लेकिन समाजवादी पार्टी द्वारा छोड़ा गया बीएसपी और गोंडवाना गणतंत्र पार्टी से हाथ मिलाने का सुर इससे ज्यादा बड़ी बात है। इन पार्टियों की पहल पर चुनाव में सवर्ण गोलबंदी के बरक्स अगर पिछड़ा-दलित एकता के पॉकेट बनते दिखे तो कांग्रेस को बड़ा नुकसान उठाना पड़ सकता है। संभव है, इस डर से गठबंधन का बंद दरवाजा उसे दोबारा खोलना पड़े।

सफाई को संस्कारों से जोड़ने की हो कोशिश

देश में पिछले दिनों 'स्वच्छता ही सेवा' पखवाड़ा मनाया गया। इसका समापन दो अक्तूबर को महात्मा गांधी की 150वीं जयंती पर हुआ। स्वच्छता अभियान के जरिए वर्तमान सरकार ने साफ-सफाई के प्रति देश में फिर से चेतना पैदा करने की कोशिश की है लेकिन काफी कुछ ऐसा है जो अधूरा है, जिसे करना बाकी है।

स्वच्छता की मुहिम ने चार साल में काफी रास्ता तय किया है। गांवों और कस्बों में कई करोड़ शौचालयों के निर्माण के आंकड़े सरकार के पास हैं। खुले में शौच के खिलाफ देशव्यापी जागरूकता फैलाने और रोकथाम के प्रयास जारी हैं। बिना शौचघर वाले लोगों को ऐसा करने से रोकने के लिए जुर्माना वसूलने और उनको अपमानित करने जैसी सख्ती की गई। बीच-बीच में नेताओं को झाड़ू के साथ किसी नामचीन सड़क पर तस्वीरें खिंचवाने के मंजर भी सामने आ जाते हैं। लेकिन इन प्रयासों के बावजूद दो बड़ी खामियां मुखर हुई हैं–पहली यह कि स्वच्छता का प्रचार जितना भी हुआ हो, सफाई के काम से जुड़े समुदाय को इस मुहिम में भागीदार नहीं बनाया गया और बिना ऐसा किए सारी कोशिशें अधूरी रहेंगी। दूसरी सच्चाई यह भी है कि सफाई को संस्कारों से जोड़ने का कोई प्रयास नहीं हुआ है। यह तभी होगा जब लोगों के मन में बसी हुई जाति व्यवस्था की गंदगी को समाज धो-पोंछकर साफ करेगा।

अफसोसनाक है कि स्वच्छता अभियान के दौरान सफाई कामगार लगातार मौत के मुंह में जा रहे हैं और हम उत्सव मना रहे हैं। इसी पखवाड़े में 11 लोग सीवरलाइन साफ करते हुए जान गंवा चुके हैं। सितम्बर के महीने में आए आंकड़े बताते हैं कि हर पांच दिन में सेप्टिक टैंक या सीवर साफ करने वाले एक शख्स की जान चली जाती है। केवल दिल्ली में 2016-18 के बीच 429 लोग सफाई करते हुए जान गंवा बैठे। देश की राजधानी में इसी साल 83 सफाईकर्मी मौत के मुंह में जा चुके हैं। कानूनन सीवरलाइन की सफाई के लिए किसी को मैनहोल में नहीं भेजा जा सकता लेकिन सरकारें खुद यह कानून तोड़ती हैं। मरने वालों को मुआवजा तक नसीब नहीं हो पाता।

1993 में संसद ने कानून बनाकर सफाई कामगारों के पुनर्वास का संकल्प प्रकट किया था। इसके लिए हर कामगार की पहचान करके उसके लिए आर्थिक मदद की योजना का ऐलान किया गया था, लेकिन 25 साल में भी उनकी पहचान का काम पूरा नहीं हुआ है। इसी प्रकार 2013 में सुप्रीमकोर्ट ने व्यवस्था दी थी कि किसी भी शख्स को सीवरलाइन की सफाई के लिए मैनहोल में उतारना गैरकानूनी होगा, फिर भी सरकारी एजेंसियां इसी तरीके से सफाई का काम करा रही हैं। हां, काम उनसे ठेके पर कराया जाता है ताकि कानूनी झंझट से बचा जा सके। अदालत ने व्यवस्था दी है कि सीवर की सफाई के दौरान यदि किसी की मृत्यु हो जाए तो 10 लाख रुपये मुआवजा दिया जाए, लेकिन उसके परिवार को मुआवजे के लिए भी लड़ना पड़ता है।

केंद्र सरकार के आंकड़े बताते हैं कि ऐसे 53 हजार से ज्यादा लोग चिन्हित किए गए हैं जो सीवर या सेप्टिक टैंक अथवा हाथों से मैला उठाने और सिर पर ढोने का काम करने के लिए मजबूर हैं। हालांकि यह आंकड़ा विश्वसनीय नहीं है क्योंकि अनेक राज्यों का दावा है कि उनके यहां एक भी ऐसा कामगार नहीं है! वैसे भी यह जानकारी 600 में से केवल 121 जिलों की ही है। बताई गई संख्या में रेलवे के आंकड़े भी नदारद हैं।

गांधीजी ने जिस स्वच्छता की अलख जगाई थी, वह कूड़े-कचरे तक सीमित नहीं थी, उसमें अंत्यज भी शामिल थे। वह स्वयं वाल्मीकि बस्तियों में जाकर रहते। सफाई का काम पूरे समाज का जिम्मा है, इस सच्चाई को स्थापित करने के लिए गांधीजी ने स्वयं मैला साफ करने का काम किया और इसके कारण पत्नी कस्तूरबा से उनका विवाद तक हुआ। आज गांधीजी का समय नहीं है। देश ने तब से औद्योगिक रूप से सैकड़ों गुना तरक्की कर ली है, आबादी भी चार गुना हो गई है। उसी अनुपात में कचरा-कूड़ा बढ़ता गया है, जिसमें बहुत बड़ी मात्रा कारखानों से निकलने वाले उच्छिष्ट की है। इस उच्छिष्ट के निस्तारण पर अलग से एक दीर्घकालीन नीति की जरूरत बनी हुई है क्योंकि यह जहरीला और पर्यावरण को गंभीर नुकसान पहुंचाने वाला होता है।

दिलचस्प बात है कि हमने अंग्रेजी पहनावा, रहन-सहन, तेल-साबुन-शैम्पू-बाथरूम तो अपना लिया, लेकिन सफाई की आदत नहीं अपनाई। नहीं सीखा कि विकसित देश अपने जैविक और ठोस कचरे से किस प्रकार निजात पाते हैं। न हमारे संस्कार स्वच्छता के अनुरूप ढाले गए हैं, न आदतें। स्वच्छता से जुड़ा सबसे अहम प्रश्न है कि सफाई के काम को आधुनिक तकनीक से क्यों नहीं जोड़ा गया है! हमने कारखानों को तकनीकी प्रगति के मुताबिक आधुनिक बना लिया, हमारा रहन-सहन भी यूरोपीय शैली में ढल गया, लेकिन साफ-सफाई का काम उसका हिस्सा क्यों नहीं बना या क्यों नहीं बनाया गया? जाहिर है, सरकार और समाज दोनों ही इस मामले में संवेदनहीन बने हुए हैं।

प्रधानमंत्री की पहल के बाद बड़े पैमाने पर शौचालयों का निर्माण हुआ है, लेकिन राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण कार्यालय ने एक लाख घरों की जांच के बाद पाया कि आज भी गांवों में 55.4 फीसदी लोग खुले में ही शौच के लिए जाते हैं। शहरों में 7.5 प्रतिशत आबादी खुले में ही मल त्याग करती है। नतीजे बताते हैं कि गांवों में 40 फीसदी से ज्यादा शौचालयों में पानी की निकासी और नालियों की व्यवस्था नहीं है। मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश में जो शौचालय बनाए गए, उनका उपयोग पानी के अभाव के कारण स्टोर रूम और रसोई के रूप में किया जा रहा है। मैगसेसे पुरस्कार प्राप्त बिजवेद्य विल्सन कहते हैं कि स्वच्छता मुहिम में मल के निस्तारण के बारे में सोचा ही नहीं गया, जिसने इस महत्वाकांक्षी योजना को असफल बनाकर रख दिया है।

दरअसल, सफाई की आदत या गंदगी में न रहने की सोच को अपनाना आसान नहीं, बहुत कठिन है। कारण, इसके लिए सदियों से चली आ रही आदतें और सोच को बदलना होगा। पहली बार गांधीजी ने इस दिशा में सोचा और उसके लिए न केवल स्वयं साफ-सफाई से रहने बल्कि दूसरों को नसीहत के लिए खुद अपने हाथों से गंदगी को हटाने की पहल की।

इसके विपरीत हमने स्वच्छता अभियान को ही एक बड़ी उपलब्धि मान लिया और उत्सव मनाने लगे लेकिन जल्दी ही एक मुकम्मल नीति की कमी सामने आ खड़ी हुई। यह तय ही नहीं किया गया कि इसे किस प्रकार जनता से जोड़ा जाए, कौन-कौन -सी सरकारी एजेंसी उसे आगे बढ़ाने में कैसे सहयोग करेगी। दोबारा उपयोग लायक बनाने के लिए कचरे को कैसे काम में लाया जाएगा और ठोस व जहरीले कूड़े का निस्तारण करने की योजना क्या होगी?

स्वच्छता मुहिम का अंतिम सत्य यह है कि एक व्यापक समाज सुधार कार्यक्रम के बिना इसे पूरा नहीं किया जा सकता। समाज सुधार के लिए हमें अपनी आदतों से पहले अपनी सोच में बदलाव लाना होगा। इसके लिए अपने मन को शुद्ध बनाना होगा। हम क्यों और कैसे सोच लेते हैं कि गंदगी की सफाई की जिम्मेदारी दूसरों की है? दुखद यह है कि हमारा समाज जितना आधुनिक हो रहा है, उतने ही ज्यादा हम अहंकारग्रस्त हो रहे हैं। अपने मन, विचारों और सोच की शुचिता के बिना स्वयं को कैसे स्वच्छ किया जा सकता है?

सिंधू, सायना, श्रीकांत और प्रणय को मिलेंगे 80-80 लाख

नई दिल्ली (आरएनएस)। ओलम्पिक रजत पदक विजेता पीवी सिंधू , राष्ट्रमंडल खेल स्वर्ण विजेता सायना नेहवाल, शीर्ष पुरुष खिलाड़ी किदाम्बी श्रीकांत और एचएस प्रणय को वोडाफोन प्रीमियर बैडमिंटन लीग (पीबीएल) के चौथे संस्करण के लिए सोमवार को हुई नीलामी में 80-80 लाख रुपये की कीमत मिली है।इस साल लीग में नौ टीमें हिस्सा ले रही हैं और इस साल की नई टीम पुणे 7 एसेज भी नीलामी में उतरी। नीलामी के पहले दौर में नौ आइकन खिलाड़ियों को उतारा गया जिनमें से एक को छोड़कर शेष आठ आइकन खिलाड़ियों को 80-80 लाख रुपये मिले। कोरिया के सोन वान सो को अवध वारियर्स ने 70 लाख रुपये में खरीदा। नीलामी में हर टीम के पास खर्च करने के लिए होंगे 2.6 करोड़ रुपये थे और वे एक खिलाड़ी पर अधिकतम 80 लाख रुपये खर्च कर सकते थे। नौ टीमों ने आइकन खिलाड़ियों को खरीदने पर सबसे ज्यादा राशि खर्च की।

सिंधू को गत चैंपियन हैदराबाद हंटर्स, सायना को नार्थ ईस्टर्न वारियर्स, श्रीकांत को बेंगलुरू रैप्टर्स और प्रणय को दिल्ली डैशर्स ने 80-80 लाख रुपये में खरीदा। ओलम्पिक चैंपियन स्पेन कैरोलिना मारिन को नयी टीम पुणे 7 एसेज ,वर्ल्ड नम्बर-1 डेनमार्क के विक्टर एक्सेलसन को अहमदाबाद स्मैश मास्टर्स, कोरिया के सुंग जी ह्यून को चेन्नई स्मैशर्स और ली योंग दे को मुम्बई रॉकेट्स ने 80-80 लाख रुपये की कीमत पर खरीदा। इंडोनेशिया के टॉमी सुगियातो सबसे अधिक बोली पाने वाले नॉन आइकॉन खिलाड़ी रहे। सुगियातो के लिए दिल्ली डैशर्स ने 70 लाख रुपये की बोली लगाई। भारतीय खिलाड़ियों में सात्विकसैराज रैंकीरेड्डी ने भारतीय नॉन आइकॉन खिलाड़ियों में सबसे अधिक बोली हासिल की। अहमदाबाद स्मैश मास्टर्स ने सात्विक के लिए 52 लाख की बोली लगाई जबकि उनका बेस प्राइस 20 लाख रुपये था। पीबीएल के चौथे सीजन का आयोजन भारतीय बैडमिंटन संघ (बीएआई) के बैनर तले स्पोर्टज़लाइव द्वारा किया जाएगा।

भारत के खिलाफ वनडे, टी-20 सीरीज के लिए विंडीज ने की टीम की घोषणा

सेंट किट्स (आरएनएस)। वेस्टइंडीज ने भारत दौरे पर खेली जाने वाली पांच मैचों की वनडे सीरीज के अलावा दो मैचों की टी-20 सीरीज के लिए टीम का ऐलान कर दिया है। क्रिस गेल ने टी-20 में चयन के लिए अपने आप को अनुपस्थित बताया। वहीं कीरन पोलार्ड और डॉरेन ब्रावो खेल के सबसे छोटे प्रारुप में टीम के साथ रहेंगे। हाल ही में केंद्रीय अनुबंध में से अपने आप को बाहर करने वाले इविन लुइस को दोनों टीमों में जगह मिली है। रिपोर्ट के मुताबिक, गेल इस समय अफगानिस्तान प्रीमियर लीग में खेल रहे हैं। इसके बाद वह टी-10 लीग में भी शिरकत करेंगे। इसलिए उन्होंने अपने आप को चयन के लिए उपलब्ध नहीं बताया।

डॉरेन दो साल बाद टीम में वापसी कर रहे है तो वहीं पोलार्ड को एक साल बाद टी-20 टीम में जगह मिली है। इन दोनों का टीम में शामिल होना क्रिकेट वेस्टइंडीज (सीडब्ल्यूआई) और खिलाड़ियों के बीच बातचीत का नतीजा है। बोर्ड चाहता है कि उसके बड़े खिलाड़ी अगले साल इंग्लैंड में होने वाले विश्व कप के लिए टीम में उपलब्ध रहें। वनडे टीम में तीन नए चेहरों को शामिल किया गया है। सलामी बल्लेबाज चंद्रपॉल हेमराज, हरफनमौला खिलाड़ी फाबियान एलेन और तेज गेंदबाज ओशेन थॉमस को टीम में जगह मिली है। एलेन और थॉमस टी-20 टीम में शामिल किए गए हैं। टी-20 में बाएं हाथ के तेज गेंदबाज ओबेड मैक्कोय, बाएं हाथ के स्पिनर खैरी पिअरे और शेरफेन रथरफोर्ड को जगह दी गई है।

आज का राशिफल

मेष: आज का दिन आनंदप्रद रहेगा। आर्थिक योजनाएं सफल होंगी। व्यावसायिक क्षेत्र में भी कुछ काम कर सकेंगे। अधिक लोगों के साथ आज संपर्क बना रहेगा।

वृषभ: वाणी की मधुरता से अन्य लोगों को प्रभावित कर पाएंगे। परिश्रम का अपेक्षित परिणाम न मिलने पर भी उस क्षेत्र में आप आगे तो अवश्य बढ़ सकेंगे।

मिथुन: आज का दिन मिश्रित फलदायी है। मन अनिर्णायक स्थिति में हो सकता है। माता के प्रति अधिक भावनात्मक रहेंगे। वाद-विवाद को टालें।

कर्क: आज भाइयों से लाभ होगा। प्रतिस्पर्धी पर विजय प्राप्त कर सकेंगे। संबंधों में भावनाओं की प्रधानता रहने से संबंध सुखदायी रहेंगे। भाग्य में वृद्धि होने के प्रसंग उपस्थित होंगे।

सिंह: आज का दिन मध्यम फलदायी होगा। परिजनों के साथ अच्छा वातावरण प्राप्त होने से आपकी प्रसन्नता में वृद्धि होगी। दूर स्थित व्यक्ति या संस्था के साथ संबंधों में दृढ़ता आएगी।

कन्या: दिन बहुत अच्छी तरह से बीतेगा। शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ और प्रसन्न रहेंगे। लक्ष्मीदेवी की कृपा आप पर बनी रहेगी।

तुला: आज का दिन मिलाजुला रहेगा। क्रोध पर संयम रखें, संभव हो तो वाद-विवाद से दूर रहें। परिजनों के साथ किसी बात पर विवाद ना हो, इसका ध्यान रखें।

वृश्चिक: आज का दिन आपके लिए लाभदायी और सुख फलदायक होगा। सांसारिक सुख प्राप्त होगा। विवाहोत्सुकों के विवाह का योग है। व्यावसायिक क्षेत्र में विशेष लाभ होगा।

धनु: दिन शुभ है। आप में परोपकार की भावना रहने से अन्य लोगों की सहायता करने के लिए आप उत्सुक रहेंगे। व्यापार में भी आपका आयोजन व्यवस्थित होगा।

मकर: आज का दिन मध्यम फलदायी होगा। थकान और सुस्ती महसूस करेंगे। बौद्धिक तथा लेखनकार्य से जुड़ी हुई प्रवृत्ति में आप सफल रहेंगे।

कुंभ: उलटे-सीधे विचारों के कारण आप परेशान हो सकते हैं। मानसिक दबाव का अनुभव हो सकता है। तेज पर संयम रखें, अन्यथा हानि हो सकती है। ध्यान और आध्यात्मिकता आपके मन को शांति प्रदान करेंगे।

मीन: कलाकार और लेखकों को अपनी प्रतिभा प्रकट करने का अवसर मिलेगा। व्यवसाय में लापरवाही के लिए उग्र समय है। स्वजनों, मित्रों के साथ पर्यटन का आनंद ले सकेंगे। वैवाहिक जीवन में निकटता और मधुरता आएगी। समाज में ख्याति मिलेगी।

चयन विवाद पर भारतीय टीम प्रबंधन नाराज

मुंबई (आरएनएस)। भारतीय क्रिकेट टीम के चयनकर्ता इस समय एक अलग ही विवाद में हैं। खबरें हैं कि टीम से बाहर किए गए सीनियर खिलाड़ियों- मुरली विजय और शिखर धवन- के साथ चयनकर्ताओं के संवाद की कमी चिंता का विषय बनी हुई है।

धवन और विजय को वेस्ट इंडीज के खिलाफ दो टेस्ट मैचों की सीरीज से बाहर रखने के बाद, चयनकर्ताओं- अथवा उनकी करीबी सूत्रों ने कहा कि- उन्होंने खिलाड़ियों से इस बारे में बात की है। विनोद राय की अध्यक्षता वाली कमिटी भी इस बयान से सहमत नजर आती है। वहीं क्रिकेटर्स की राय इस पर अलग है। कुछ खिलाड़ी जो अपना नाम सामने आने देना चाहते हैं जबकि कुछ ऐसा नहीं चाहते, पर उन सबका कहना है कि क्रिकेटर्स से इस बाबत कोई बात नहीं की गई।

सूत्रों ने बताया, बात साफ है, या तो खिलाड़ी या फिर चयनकर्ता, कोई तो है जो सच नहीं बोल रहा है। अगर (बीसीसीआई/सीओए) इस मुद्दे को

सुलझाना चाहते हैं, तो वे कप्तान, कोच, सीनियर खिलाड़ियों और सिलेक्टर्स के साथ बैठकर उनकी बात क्यों नहीं सुनते? इससे फौरन साफ हो जाएगा कि कौन सच बोल रहा है और कौन नहीं।

मीडिया में हालांकि कई तरह की खबरें आ रही हैं, लेकिन मामले को बेहद करीब से जानने वाले सूत्रों का कहना है कि इस मुद्दे को लेकर खिलाड़ियों और चयनकर्ताओं के बीच कोई बैठक नहीं हुई है। न ही सीओए ने इस मामले में कोई दखल दी है या फिर उसे समझने का प्रयास किया है। विजय को यह उनके भविष्य के बारे में स्पष्ट राय नहीं दी गई। न ही करुण नायर को बताया गया कि आखिर क्यों हर बार उन्हें नजरअंदाज किया जाता रहा है। यहां तक कि रोहित शर्मा, जिन्हें वेस्ट इंडीज के खिलाफ सीरीज के लिए टीम में शामिल किए जाने की पूरी उम्मीद थी, को भी चयन समिति की ओर से कोई संदेश नहीं दिया गया। इतना ही नहीं बीसीसीआई ने खिलाड़ियों को मीडिया के सामने अपनी राय व्यक्त करने के संदर्भ में कोई नोटिस भी जारी नहीं किया है।

विजय अब भारत ए के साथ रहकर रन बनाने की कोशिश करेंगे ताकि वह ऑस्ट्रेलिया दौरे के लिए अपना दावा पेश कर सकें। नायर के लिए अब चुनौती और बढ़ गई है क्योंकि इंग्लैंड दौरे पर अपने प्रदर्शन से प्रभावित करने वाले आंध्र प्रदेश के क्रिकेटर हनुमा विहारी नंबर 6 के मजबूत दावेदार हैं। रोहित शर्मा के लिए भी टेस्ट क्रिकेट में वापसी करना अभी मुश्किल नजर आ रहा है। वहीं धवन भी निकट भविष्य में टेस्ट टीम में बनाते नजर नहीं आ रहे।

16 दिसंबर को शादी करेंगे साइना नेहवाल-पी. कश्यप

नई दिल्ली (आरएनएस)। विश्व की 11वें नंबर की बैडमिंटन खिलाड़ी सायना नेहवाल साथी भारतीय खिलाड़ी परूपल्ली कश्यप के साथ इस वर्ष 16 दिसंबर को विवाह बंधन में बंधने जा रही हैं।?ओलंपिक पदक विजेता सायना ने पुष्टि की है कि वह 16 दिसंबर को कश्यप के साथ विवाह करेंगी। दोनों भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ी पिछले 10 वर्षों से एक दूसरे के साथ रिश्ते में हैं लेकिन उन्होंने अपने प्रेम प्रसंग की खबर को काफी गुप्त रखा था।

दोनों खिलाड़ी वर्ष 2005 से ही गोपीचंद अकादमी में एक साथ ट्रेनिंग कर रहे थे। 28 साल की सायना ने अपनी शादी की पुष्टि करते हुए कहा कि उनके लिए कश्यप के साथ शादी के बंधन में बंधने का यह सही समय है क्योंकि वह आगामी टूर्नामेंटों में काफी व्यस्त है। विश्व में 57वीं रैंक कश्यप और सायना के प्रेम संबंधों की खबरें हाल ही में सार्वजनिक हुई थीं। गोल्ड कोस्ट राष्ट्रमंडल खेलों में स्वर्ण और एशियाई खेलों में कांस्य जीतने वाले सायना ने बताया कि वह विदेश दौरों के दौरान कश्यप के नजदीक आयीं और 2007 में उन्होंने डेटिंग करना शुरू किया।

उन्होंने बताया कि उनके परिजनों को भी पहले से ही कश्यप के साथ उनके रिश्ते का आभास था और वे इस फैसले से खुश है।

खाना/खजाना- कच्ची हल्दी का आचार

आवश्यक सामग्री

- कच्ची हल्दी - 250 ग्राम (कद्दूकस की हुई एक कप)
- सरसों का तेल - 100 ग्राम (आधा कप)
- नमक - 2 1/2 छोटी चम्मच
- लाल मिर्च - आधा छोटी चम्मच
- दाना मैथी - 2 1/2 छोटी चम्मच दरदरी पिसी
- सरसों पाउडर - 2 1/2 छोटी चम्मच
- अदरक पाउडर - 1 छोटी चम्मच
- हींग - 2-3 पिंच
- नींबू - 250 ग्राम (1/2 कप का रस)

विधि- हल्दी को छीलिये और धोकर पानी सुखाने के लिये थोड़ी देर के लिये धूप में रख दीजिये या सूती कपड़े से पोंछ कर पानी हटा दीजिये.

अब इस छिली हल्दी को कद्दूकस कर लीजिये या बारीक काट लीजिये. चूंकि हल्दी का अचार एकदम कम मात्रा में खाया जाता है इसलिये छोटे टुकड़ों के अचार के बजाय कद्दूकस की गई हल्दी का अचार अधिक सुविधाजनक होता है.

सरसों का तेल कढ़ाई में डाल कर अच्छी तरह गरम करके, थोड़ा सा ठंडा कर लीजिये, तेल में हींग, मैथी और सारे मसाले और कद्दूकस की गई हल्दी डाल कर अच्छी तरह मिलाइये.

हल्दी के अचार को प्याले में निकालिये और अचार में नींबू का रस डालकर अच्छी तरह मिलाकर हल्दी के अचार को ढककर रख दीजिये. 4-5 घंटे बाद अचार चमचे से फिर से ऊपर नीचे करके मिला दीजिये.

हल्दी का अचार बन चुका है, हल्दी के अचार को एकदम सूखे कांच या चीनी मिट्टी के कन्टेनर में भर कर रख लीजिये, सम्भव हो तो अचार के कन्टेनर को 2 दिन धूप में रख दें, धूप में रखने से अचार की शैल्फ लाइफ बढ़ जाती है और अचार स्वादिष्ट भी हो जाते हैं.

हल्दी का अचार यदि तेल में डुबा हुआ रखा हो तब यह अचार 6 महिने से भी ज्यादा अच्छा रहेगा.

शब्द सामर्थ्य

बाएं से दाएं

1. खूब कसा हुआ, फुर्तीला, जो शिथिल व आलसी न हो 3. सार्वजनिक स्थान, संस्था, अस्तित्व, समिति 4. पौरुष, पुरुषत्व, मर्द होने का भाव 6. अंधेरा, अंधकार 7. लिपाई करना 9. शरीर, काया, जिस्म 10. मां के पिता, विभिन्न 12. महीना, मास 14. प्रियतम, बलमा, सजना 15. पांडवों का सबसे छोटा भाई 17. नशा, घमंड, खाता 19. वनोपज, खन से प्राप्त सामाग्री 21. शक्तिशाली, बलवान 24. तीव्र इच्छा 25. हथेली।

ऊपर से नीचे

1. निंदा, बुराई 2. निर्जीव, निष्प्राण 3. ध्वनियों या स्वरों का विशिष्ट लय में प्रस्फुटन, धुन, म्युजिक 4. झुका हुआ, विनीत 5. रूठे हुए को प्रसन्न करना, राजी करना 8. आश्रय, शरण 11. जन्म, जिंदगी 12. ईंसानियत, मनुष्यता 13. रास्ता, मार्ग 14. एक हिंदी महीना, श्रावण 15. सपाट, जो उबड़-खाबड़ न हो 16. पति का छोटा भाई 18. गहरा कीचड़, पंक 20. आत्मा, अंतःकरण (उ.) 22. बीता हुआ या आने वाला दिन 23. बगुला।

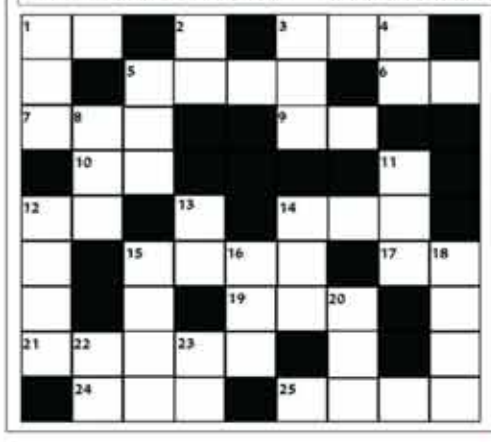

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 53 का हल

गु	मा	न			प	यो	द	
न		ह	क	दा	र		ल	य
ह	वा	ला	त		च		द	म
गा			रा	ज	म	ह	ल	
र	ई	स		ग		स		अ
	मा		प	त	वा	र		ल
ख	न	क	ना		ह	त		बे
स	दा		ह		वा		शो	ला
रा	र				ही	र	क	

सू-दोकू

	3		7				2	1
2				9		4		
	7		1				5	
		1		5		2		7
	5				4			
		4		1		8		5
					1			
1		5		3		9		
	2		6		5		1	

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गों का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते है।
3. बाएं से दाएं और ऊपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.53 का हल

8	9	5	1	6	3	2	4	7
3	2	1	9	7	4	8	6	5
4	7	6	2	5	8	3	9	1
7	6	9	5	2	1	4	3	8
1	8	3	4	9	7	6	5	2
2	5	4	8	3	6	1	7	9
5	3	8	7	4	2	9	1	6
6	1	7	3	8	9	5	2	4
9	4	2	6	1	5	7	8	3